IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 8, Issue 1, August 2019

fgnh dk; e Lokeh vNrkun dk Loj(vfHk;fDr vkj Lohdfr dk i'u

Mk je'k ;kno
असि0 प्रोफेसर – हिंदी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कैराना शामली

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने दलित जीवन को , उसकी वेदना ,संत्रास ,स्वप्न और आकांक्षाओं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। स्वाध्ययन से वे अपने समाज के अतीत से वाकिफ हुए , वर्तमान का विश्लेषण कर सके और भविष्य के लिए सपने बुन सके। उनकी सर्जना और कविता एक व्यापक आंदोलन में शामिल रही। वह स्वयं आंदोलन के भाव से निर्मित हुई और आंदोलन को बढाती–फैलाती भी रही। इस आंदोलन का उद्देश्य दलित जीवन को स्वतंत्रता , समानता और बंधुत्व की भूमि उपलब्ध कराना ताकि वे अपनी मानवीय गरिमा और अपने अधिकारों को हासिल कर सकें। यह आश्चर्य का विषय है कि उस समय छायावादी कविता कल्पना के लोक में विचरण कर रही थी। निराला जैसे क्रांतिकारी कवि मानवीय सम्बन्धों में आधुनिक मूल्यों की हिमायत करते है – ‘तुम करो व्याह तोडता नियम ,मै सामाजिक योग में प्रथम ‘’ । लेकिन जमीनी स्तर पर यह विद्रोह कभी साकार नहीं हो पाया , एक व्यक्तिगत विद्रोह ही रहा । वहीं अछूतानंद हरिहर ने अपने विद्रोह को सामाजिक धरातल पर उतारा और एक आंदोलन का रूप दिया । उनकी कविता में कल्पना की भव्यता भले नहीं है लेकिन खेत खलिहान , पसीना और कोडे की मार का दर्द मौजूद है। इसलिए हरिहर की कविता उन पहलुओं को उजागर करती है , जो भव्य छायावादी दौर में छूट गए थे। केवल दलित कविता ही नहीं मुख्य धारा की कविता का फलक भी इन दोनों कवियों के बिना अधूरा है , जिस प्रकार सामाजिक मुक्ति के बिना राजनैतिक मुक्ति का उद्देश्य ।

इस शोध के केन्द्रीय बिन्दु है–

- बींसवी सदी के आरंभ में दलित जीवन
- दलित आंदोलन की परिस्थतियां
- आरंभिक दलित अभिव्यक्ति और उसकी बारीकियॉ
- दलित जीवन की भाषा और उसके चरित्रों का सही संदर्भ

स्वामी अछूतानंद हरिहर का जन्म 6 मई 1879 में आज के फीरोजाबाद जनपद के सिरसागंज के मौजा उमरी में हुआ था। इनके पूर्वज मूलत; कन्नौज के सौरिख गॉव के निवासी थे लेकिन ब्राहाण से विवाद के चलते उन्होने आशंका के बाद पलायन किया और उमरी में निवास करने लगे। पिता मोतीराम देवली कैंट में सेना की नौकरी करते थे। माता रामप्यारी घरेलू स्त्री थी। बालक का नाम हीरालाल रखा गया । हीरालाल कुछ बडा हुआ तो पिता ने स्थानीय स्कूल में उसका प्रवेश करवाना चाहा । लेकिन ब्राहाण अध्यापक ने बालक का प्रवेश करने से इंकार कर दिया । यह जाति भेदभाव से उनका पहला गंभीर सामना था। उनके पिता की मृत्यु हो गई और वे अपने चाचा के साथ अजमेंर कैंट आ गए । इस कैंट के स्कूल में उन्होने व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त की । सन 1893 में जब वे मिडिल पास कर निकले तो उनको हिन्दी ,अंग्रेजी ,संस्कृत और फारसी भाषाओं का ज्ञान हो चुका था। वे स्वभाव से घुमक्कड थे , दूर दूर तक कई दिनों की यात्रा पर निकल जाते ,मठों में साधुओं के बीच घूमते रहते । उनकी भटकन

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 8, Issue 1, August 2019

शायद उनकी जाति भेदभाव की बेचैनी से पैदा होती है। इससे चिन्तित होकर घरवालों ने उनका व्याह इटावा की दुर्गाबाई के साथ कर दिया । उन्होने अपने पति का जीवन के हर दौर में साथ दिया ।

जाति भेदभाव से बेचैन हीरालाल आर्य समाज के स्वामी सच्चिदानंद के संपर्क में आए । आर्यसमाज के जातिभेद विरोधी और शूद्रों की समानता सम्बन्धी विचारों से प्रभावित होकर वे 1905 में इसमे शामिल हो गए और नाम पडा 'स्वामी हरिहरानंद ' । कई साल तक उन्होनें समाज के विचारों का जनता में निरंतर प्रचार प्रसार किया । जिसमें उन्होने कवित्व , गायन और भाषण की कला का भरपूर प्रयोग किया । संगठन में रहकर उन्हें इसके सदस्यों की करनी–कथनी में फर्क महसूस होने लगा था । इस कारण मोहभंग का एक अवसर आ ही गया । वे अपने जन्म क्षेत्र में आर्य समाज के नाम पर स्कूल की स्थापना करना चाहते थे। उन्होने इसके लिए लोगों से चन्दा इकट्ठा किया और इसमें उनकी पत्नी दुर्गाबाई ने अपने गहने भी दिए । उनके सहयोगी श्री चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु के अनुसार इसी स्कूल में जब दलित बच्चों को सबसे अलग बैठाया गया तो स्वामी के सब्र का बॉध टूट गया । उन्होने आर्य समाज छोड दिया । वे इसकी साजिश को समझ गए । तब उन्होने दलितों के बीच जन जागरण का कार्य किया । इस बार दलित समाज की अपनी संत परंपरा को उन्होने अपना आधार बनाया । आगरा के जाटवों के बीच आर्य समाज के प्रति आगाह किया। दिल्ली तक में सभाएं की और दलित समाज को संत परंपरा के मूल्यों से जोडा । पहली बार हरिहर का नाम दिल्ली के शाहदरा में एक शास्त्रार्थ के बाद हुआ । उन्होने पंडित अखिलानंद को आर्यो की विदेशी उत्पत्ति पर विवाद में हराया । दलित समाज उनकी प्रतिभा पर न्यौछावर हो गया । उनका सार्वजनिक अभिनंदन करते हुए उन्होने प्रकाण्ड विद्वानों को दी जाने वाली उपाधि ' श्री 108 ' प्रदान की । अब उनका नाम हो गया श्री 108 अछूतानंद जी महाराज 'हरिहर ' । उन्होने 1922 में दिल्ली में विराट ' अछूत सम्मेलन ' का आयोजन किया । इसी से ' आदि हिन्दू धर्म ' आदोंलन का आरंभ हुआ। स्वामी जी का सम्पूर्ण साहित्य इसी के संदर्भ में समझा जा सकता है।

प्रथम विश्वयुद्व तक दलित रचनाकारों का कहीं संकेत नहीं मिलता है। भारतेन्दु–द्विवेदी युग के रचनाकार अतीत गौरव , संस्कृति और समाज सुधार की भावना में बह रहे थे। अचानक ही दलित साहित्य के दो रचनाकारों ने पटल पर आकर अतीत के मूल्यों के विराध में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को अभिव्यक्त किया । उस अतीत गौरव का खण्डन किया ,जिसके उपर हिन्दी मुख्य धारा का रचना कार मुग्ध था। इस अचानक दिखने वाले परिवर्तन के के पीछे कारण निम्न थे –

- अंग्रेजी शासन ; कानून की समानता का अधिकार ,प्रतिनिधि शासन की अवधारणा।
- महाराष्ट में सत्यशोधक आंदोलन और शिक्षा के महत्व की चेतना ।
- कम्युनल अवार्ड की घोषणा और जनगणना सम्बन्धी विवाद।
- प्रथम विश्व युद्व में दलितों और खेतिहर जातियों की भागीदारी ।

अंग्रेजी शासन ने जाति पर आधारित न्याय व्यवस्था के स्थान पर आधुनिक न्याय प्रणाली की स्थापना की । इस प्रणाली में शूद्र और ब्राहाण को बराबर माना गया । इसके साथ ही संपत्ति जैसे मामले में कानूनी संरक्षण सिद्वांतत: उपलब्ध हुआ । इस कारण दलित सुरक्षित रूप से अपने अधिकारों की मॉग कर सके और अपने अभिव्यक्ति की आजादी के द्वारा जनमत बना सके। स्वामी अछूतानंद के कहने पर ही वायसराय ने आदि हिन्दू धर्म की सभाओं के लिए पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराने का आदेश जारी किया । इस कारण इन सभाओं में वे उपद्रवी तत्वों की परवाह किए बिना अपनी बात कह सके । दूसरा ज्योति बा फूले ने दलित बहुजन समाज का सत्यशोधक आंदोलन खडा किया था । इस आदोंलन ने सर्वाधिक महत्व शिक्षा को दिया – 'शिक्षित बनो ' उनका नारा था। यद्यपि महात्मा फूले के विचारों से संयुक्त प्रांत के इन दो रचनाकारों के प्रभावित होने के कोई प्रत्यक्ष संकेत नहीं है। लेकिन आंदोलन ने वंचित समाज के बीच शिक्षा को एक मूल्य के रूप में अवश्य ही स्थापित कर दिया । अकारण नहीं है कि मोतीराम अपने बेटे 'हीरालाल' का स्कूल में प्रवेश कराने के लिए जी तोड प्रयास करते हैं ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 8, Issue 1, August 2019

शिक्षा ने उनमें जातीय चेतना की पहचान का विवेक पैदा कर दिया । स्वामी अछूतानंद बहुत दिनों तक आर्य समाज की सेवा करते रहे। वह एक तरह से छद्म चेतना के कारण गुलामी को पुख्ता करते रहे । लेकिन जब मोह भंग हुआ तो वे आर्य समाजी विचारों के बजाय चिंतन की अपनी जातीय परंपरा अर्थात रैदास –कबीर पर वापिस आए ।

मार्ले मिन्टो सुधारों के द्वारा 1909 में मुस्लिम समाज को सामुदायिक अवार्ड प्रदान किया गया । इसके तहत एक समुदाय के रूप में उन्हे अपने प्रतिनिध के चुनाव का अधिकार दिया गया । मुस्लिम नेताओं का प्रतिनिधिमण्डल 1910 में वायसराय से मिला और जनगणना आंकडों के सम्बन्ध में सवाल पैदा किए । जनगणना का सवाल शासन में प्रतिनिधित्व के अनुपात से सीधे तौर पर जुडा हुआ था । इन नेताओं का कहना था कि अछूत हिन्दू नहीं है तो फिर उनकी गणना हिन्दुओं के भीतर क्यों और हिन्दुओं को शासन– प्रशासन में अधिक प्रतिनिधित्व क्यों ! इस प्रश्न पर कांग्रेस समेत हिन्दू मध्य वर्ग बहुत चिंतत हो उठा । अब उसे शासन में प्रतिनिधत्व के दावे हेतु एक ओर तो संख्या की आवश्यकता थी तो दूसरी ओर उसके अपने लिए सस्ते श्रम के लिए सेवक जाति की आवश्यकता थी। अछूत को बाहर करते है तो हिन्दू की संख्या कम होती और उनके लिए शासन पद घट जाते और वर्चस्व टूटता है , वही अछूत को अपने बराबर स्वीकार करते है तो सेवकों की पूरी जमात हाथ से निकली जाती है। इसके बीच का रास्ता बनाते हुए उन्होने कथनी में हिन्दू पहचान को जोर शोर उभारा जबकि करनी में दलितो को सत्ता और शिक्षा से वंचित रखने का प्रयास किया । ताकि वे परिवर्तन में सफलता के लिए वांछित शक्ति न जुटा सके। कांतिकारी शहीद भगत सिंह इस बारे में 'विद्रोही ' पत्र में लिखते हैं – '' अधिक अधिकारों की मॉग के लिए अपनी अपनी कौम की संख्या बढाने की चिंता सभी को हुई .....अब तीनों कौमे अछूतों को अपनी अपनी ओर खिंच रही '' यहॉ तीन कौम से आशय – हिन्दू , मुस्लिम और ईसाई से है।

प्रथम विश्व युद्व ने दलित समाज में चेतना के उभार में योगदान दिया । अंग्रेजों की तरफ से मोर्चो पर लडने के लिए बडी संख्या में पिछडे और दलित वर्गो के लोग बाहर गए । उन्होने दूसरी दुनिया के दर्शन किए । जब वापिस लौट कर आए तो वे जाति के खोल में पुन; बॅधने के लिए सहज रूप से तैयार नहीं हुए। विश्वयुद्व के समय उत्पादन में श्रम परक कार्यो में इन जातियों को रोजगार के अवसर मिले । इन सबका परिणाम दलित में अपने कौम के प्रति नए नजरिए और विश्वास की बढोत्तरी हुई। वैसे भी सेना में दलितों की नौकरी और उनमें सशक्तीकरण में सीधा सम्बन्ध बनता है। स्वामी अछूतनंद के चाचा और पिता सेना की नौकरी में लगे थे। डा0 अम्बेडकर के पिता भी रेजिमेंट में रह चुके थे।

उक्त दशाओं और दबावों के कारण दलित समाज की दशा बेहतर हुई । समाज में सशक्तीकरण का प्रभाव साहित्य संसार में उनकी उपस्थिति के रूप में नजर आए तो आश्चर्य क्या ! स्वामी अछूतानंद और हीरा डोम समर्थ रूप से अपने समय की धडकन को ही अपने साहित्य में व्यक्त करते हैं

स्वामी अछूतानंद आंदोलनकारी व्यक्तित्व थे। उनका साहित्य इस आंदोलनधर्मिता की देन है और यह साहित्य बदले मे उनके आंदोलन को पुष्ट करता चलता है। उनके कविता का विषय इतिहास , वर्तमान और भविष्य के आयामों तक फैला है। उनके साहित्य की विशेषताओं को बिन्दुवार समझ सकते है।

- निर्गुण भक्ति मूल्यों की स्थापना
- वेदना और संत्रास का बोध
- इतिहास बोध
- आत्म गौरव और निज पहचान की घोषणा
- नाटकों में बदलाव की चेतना

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 8, Issue 1, August 2019

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने अपने आदि धर्म के लिए जिन मूल्यों को चुना उनका आधार स्वतंत्रता और समता रहा है। उनके परिवार के लोग कबीर–रैदास के अनुयायी है। हरिहर भी वेद और शास्त्र को निस्सार मानते है। वे निराकार ईश्वर को मानते है। इससे आगे बढकर कहते है कि निराकार ब्रहा भी अछूत है क्योकि उनकों स्पर्श नहीं किया जा सकता है । इस ईश्वर तक पहुचने का माध्यम ज्ञान है। यह कोई किताबी ज्ञान नहीं है बल्कि इसे हरिहर 'पारख ज्ञान ' कहते है –

'' जब तक पारख आय न , अनुभव तीन प्रकार
हरि पद निर्भय पाय ना , सत्य विवेक विचार ''

इसमें पवित्र आचरण पर जोर है । कर्मफल , परलोक और पुर्नजन्म की मान्यताओं पर प्रहार किया गया है।

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने उस संत्रास को अपनी कविता में व्यक्त किया है ,जिसमें दलित समाज जीवन यापन कर रहा है। यह गुलामी आर्थिक है , इससे भी बढकर सांस्कृतिक भी है। ब्राहाण ने अपनी पुस्तकों और साहित्य के माध्यम से दलित को इन सांस्कृतिक बेडियों में जकडा हुआ है। वह तन का नही मन का गुलाम बन गया है। वह हिन्दू धर्म में अपनी श्रद्वा रखता है। यह कैसा धर्म है जो अपने अनुयायी को उठा नही बल्कि नीचे गिराता जा रहा है। इस यातना को उनकी कविता में देख सकते है –

''निशदिन मनुस्मृति ये हमको जला रही है
.....
दौलत कभी न जोडे , गर हो तो छीन ले वह
फिर नीच कह हमारा दिल दुखा रही है। ''

इस यातना और दुख के कारणों की खोज में वे इतिहास की तरफ मुडते है। उन्होने वेद और शास्त्रों का गहन अध्ययन करके पाया कि दलित समाज ही मूलत; इस देश का मूल निवासी है , मूल हिन्द का है , मूल हिन्दू है ,आदि हिन्दू है। ब्राहाण और अन्य शोषक बाहर से आए आर्य है। आर्यो ने ही वीर मूल निवासी को धोखे से हराकर गुलाम बना लिया है। मूल निवासी खानाबदोश आर्यो की तुलना में कहीं विकसित सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते थे –

''छलौ छिद्र रच किले छीन कर , धोखे से कारे सब काज
साम , दाम , दंड और भेद ये कपट नीति से किया स्वराज्य ''

स्वामी अछूतानंद ने केवल वेदना नहीं बदलाव का साहित्य रचा है। वे इन दशाओं को अब अधिक सहन करने को प्रस्तुत नहीं है। वे दलित समाज को अपने आत्मगौरव के लिए ललकारते है। अपनी पहचान को कायम करने के लिए वे महात्मा गॉधी का दिया 'हरिजन ' नाम अस्वीकार करते है। इसके लिए उनका कविता में निम्न तर्क उभरता है –

'' हम हरिजन तो तुमहूं हरिजन कस न , कहौ श्रीमान
कि तुम हौ उनके जन , जिनकों जगत कहत शैतान ''

स्वामी अछूतानंद अपने समाज के प्रति होने वाले अत्याचार से इतने व्यथित होते है कि वह समाज के लिए 'नेशन ' की अवधारणा रखते है। वे दलित समाज को एक नेशन के रूप में परिभाषित करते है। इस समाज की एक बडी संख्या है , एक विस्तृत भूभाग है , आपस में भाईचारा है ,और एक समान रहन सहन तथा संस्कृति है। इस नेशन या मुल्क के साथ ही वे मुल्की अधिकारों का प्रश्न अपनी कविताओं में उठाते है –

'' बोले आदि वंश के भाई , मुल्की हक बॅटवइयों कि ना
अत्याचार बेगार आदि के दुख मिटवइयों कि ना ''

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 4.819

Volume 8, Issue 1, August 2019

अपने विचारों को जनमानस की चेतना का अंग बनाने के लिए उन्होने सामाजिक विधा नाटक को अपनाया । उन्होने 'मायानंद का बलिदान ' और 'राम राज्य ' नामक के दो नाटक लिखे । विद्वान कंवल भारती उनके सहयोगी चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु के हवाले से बताते है कि स्वामी जी के मन में पौराणिक विषयों को लेकर कई विषय कच्चे काम के रूप में उपस्थित थे। लेकिन आंदोलन चलते रहने के कारण उन्हे लिपिबद्व करने का समयाभाव रहा । वे उस समय लोकप्रिय हिन्दू विषयों पर आयोजित नाटकों के विरोधी थे क्योंकि इससे दलितों के बीच छद्म चेतना का प्रसार होता है और सांस्कृतिक गुलामी मजबूत होती है। अपने नाटकों में उन्होने पौराणिक विषयों में नए अर्थ भरे और नए सिरे से गलत–सही ,नीति और अनीति से परिभाषित किया । मायानंद नाटक गुजरात के दलित सन्यासी की कथा है। वह अपने सद्विचार और व्यवहार से रानी को प्रभावित करता है। उन्हे लोगों के कल्याण और समान व्यवहार की नीति बताता है। इससे कुपित ब्राहाण साजिश करते है और बॉध निर्माण के अवसर पर छल से उसकी नरबलि चढवा देते है। यह दलितों के उस इतिहास बोध की अभिव्यक्ति है , जिसमें उनके साथ धर्म और आस्था के नाम पर छल किया गया ।

ey xzFk

काव्य संग्रह ; आदि खण्ड काव्य फुटकर रचनाएं 'अछूतानंद संचयिता ' में उपलब्ध

नाटक ; मायानन्द का बलिदान

lgk;d xzFk

- दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – शरणकुमार लिंबाले (वाणी प्रकाशन, 2001)
- दलित चिंतन की भूमिका – कँवल भारती (इतिहास बोध प्रकाशन, 1994)
- भारतीय दलित साहित्य एक परिचय – डॉ. नामदेव (अनुभव प्रकाशन)
- दलित साहित्य स्वरूप और संभावनाएँ – डॉ. श्यौराज सिंह बेचौन (सम्यक प्रकाशन)
- दलित साहित्य के प्रतिमान – डॉ. एन. सिंह (वाणी प्रकाशन, 2012)
- भारतीय दलित साहित्य का इतिहास (3 खंड) – बाबूराव बागुल (अनुवाद नवयुग)

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in